

**Note :** If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – [www.jainelibrary.org](http://www.jainelibrary.org) and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

## Vastusara Prakaran

Folder No.	002673
Granth Name	Vastusara Prakaran
Author	Chandragaj Thakur
Translator	Pt. Bhagwandas Jain
Publisher	Jain Vividh Granthmala Jaipur
Edition	1
Year	1936
Pages	264

## वास्तुसार प्रकरण

फोल्डर नं.	००२६७३
ग्रन्थ	वास्तुसार प्रकरण
मूल	चन्द्राङ्गज ठाकुर
अनुवादक	पं. भगवानदास जैन
प्रकाशक	जैन विविध ग्रन्थमाला जयपुर
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९३६
पृष्ठ	२६४

मुख्य टाईटल

समर्पण

धन्यवाद

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

पहला गृहप्रकरण

मंगलाचरण -----	१
द्वार गाथा -----	१
भूमि परीक्षा -----	२
वर्णानुक्ल भूमि -----	२
दिक साधन -----	२
चौरस भूमि साधन -----	४

अष्टमांश भूमि साधन -----	५
भूमि लक्षण फल -----	५
शल्य शोधन विधि -----	६
वत्सचक्र -----	९
शेषनागचक्र -----	११
वृषभवास्तुचक्र -----	१४
गृहारंभे राशिफल -----	१५
गृहारंभे मासफल -----	१६
गृहारंभे नक्षत्रफल -----	१८
नक्षत्रों की अधोमुखादि संज्ञा -----	१८
शिलास्थापन क्रम -----	२०
खातलग्न विचार -----	२०
गृहपति के वर्णपति -----	२२
गृह प्रवेश विचार -----	२२
ग्रहों की संज्ञा -----	२४
राजा आदि के पांच प्रकार के घरों का मान -----	२५
चारों वर्णों के गृहमान -----	२६
घर के उदय का प्रमाण -----	२७
मुख्य घर और अलिंद की पहिचान -----	२८
शाला और अलिंद का प्रमाण -----	२८
गज (हाथ) का स्वरूप -----	९
शिल्पी के योग्य आठ प्रकार के सूत्र -----	३०
आय का ज्ञान -----	३०
आठ आय के नाम -----	३१
आय पर से द्वार की समझ -----	३२
एक आय के ठिकाने दूसरा आय दे सकते हैं -----	३२
कौन २ ठिकाने कौन २ आय देना -----	३२
घर के नक्षत्र का ज्ञान -----	३३
घर के राशि का ज्ञान -----	३४
व्यय का ज्ञान -----	३५
अंश का ज्ञान -----	३५
घर के तारे का ज्ञान -----	३५
आयादिका अपवाद -----	३७
लेन देन का विचार -----	३७
परिभाषा -----	३८

घरों के भेद -----	३९
धुवादि घरों के नाम -----	३९
प्रस्तार विधि -----	३९
धुवादि १६ घरों का प्रस्तार -----	४०
धुवादि घरों का फल -----	४१
शांतनादि ६४ द्विशाल घरों के नाम -----	४२
द्विशाल घर के लक्षण -----	४४
शान्तनादि ६४ घरों के लक्षण -----	४५
सूर्यादि आठ घरों का लक्षण -----	५३
घर में कहां २ किस २ का स्थान करना चाहिये -----	५६
द्वार -----	५७
शुभाशुभ गृह प्रवेश -----	५७
घर और दुकान कैसे बनाना -----	५९
द्वार का प्रमाण -----	५९
घर की ऊंचाई का फल -----	६०
नवीन घर का आरम्भ कहां से करना -----	६०
सात प्रकार के वेध -----	६१
वेध का परिहार -----	६२
वेध फल -----	६२
वास्तुपुरुष चक्र -----	६३
वास्तुपद के ४५ देवों के नाम व स्थान -----	६५
६४ पद के वास्तु का स्वरूप -----	६७
८१ पद के वास्तु का स्वरूप-----	६८
१०० पद का वास्तुचक्र -----	६९
९४ पद का वास्तुचक्र -----	७०
८१ पद का वास्तुचक्र -----	७०
द्वार, कोने, स्तंभ, किस प्रकार रखना -----	७२
स्तंभ का नाप -----	७३
खूंटी आला आदि का फल -----	७३
घर के दोष -----	७४
घर में कैसे चित्र बनाना चाहिये -----	७५
घर के द्वार के सामने देवों के निवास का फल -----	७५
घर के सम्बन्धी गुण दोष -----	७६
घर में कैसी लकड़ी वा परना-----	७६
दूसरे मकान के वास्तुद्रव्य का विचार -----	७८

शयन किस प्रकार करना -----	७९
घर कहां नहीं बनाना -----	७९
गौ, बैल और घोड़े बांधने का स्थान -----	८०
<b>दूसरा बिम्बपरीक्षा प्रकरण</b>	
मूर्ति का स्वरूप -----	८१
मूर्ति के पत्थर में दाग का फल -----	८१
मूर्ति की ऊंचाई का फल -----	८२
पाषाण और लकड़ी की परीक्षा -----	८२
धातु, रत्न काष्ठ आदि की मूर्ति -----	८४
सम चौरस पञ्जासन मूर्ति का स्वरूप -----	८६
मूर्ति की ऊंचाई-----	८६
खड़ी प्रतिमा के अंग विभाग और मान -----	८७
बैठी मूर्ति के अंग विभाग -----	८७
दिगम्बर जिनमूर्ति का स्वरूप -----	८८
मूर्ति के अंग विभाग का मान -----	८९
ब्रह्मसूत्र का स्वरूप -----	९३
परिकर का स्वरूप -----	९३
प्रतिमा के शुभाशुभ लक्षण -----	९६
फिर संस्कार के योग्य मूर्ति -----	९७
घरमंदिर में पूजने लायक मूर्ति -----	९८
प्रतिमा के शुभाशुभ लक्षण -----	९९
देवों के शस्त्र रखने का प्रकार -----	१०१
<b>तीसरा प्रासाद प्रकरण</b>	
खात की गहराई -----	१०२
कूर्मशिला का मान -----	१०३
शिला स्थापन क्रम -----	१०४
प्रासाद के पीठ का मान -----	१०५
पीठ के थरों का मान -----	१०५
पच्चीस प्रकार के प्रासाद के नाम और शिखर-----	१०७
चौबीस जिनप्रासादों का स्वरूप -----	१०८
प्रासाद की संख्या -----	११०
प्रासाद का स्वरूप -----	११०
प्रासाद के अंग -----	११२
मंडोवर के १३ थर -----	११२
नागर जाति के मंडोवर का स्वरूप -----	११३

मेरु जाति के मंडोवर का स्वरूप -----	११३
सामान्य मंडोवर का स्वरूप -----	११४
प्रासाद का मान -----	११६
प्रासाद के उदय का प्रमाण -----	११६
भिन्न २ जाति के शिखरों की ऊंचाई -----	११७
शिखरों की रचना -----	११८
आमलसारकलश का स्वरूप -----	११९
शुकनाश का मान -----	१२०
मंदिर में कैसी लकड़ी वापरना -----	१२१
कनकपुरुष का मान -----	१२१
ध्वजादण्ड का प्रमाण -----	१२२
ध्वजा का मान -----	१२४
द्वार मान-----	१२४
बिम्बमान -----	१२५
प्रतिमा की दृष्टि -----	१२७
देवों का दृष्टि द्वार -----	१२९
देवों का स्थापन क्रम -----	१३०
जगती का स्वरूप -----	१३०
प्रासाद के मंडप का क्रम -----	१३४
मंदिर के तल भाग का नकशा -----	१३५
मंदिर के उदय का नकशा -----	१३६
मंडप का मान -----	१३७
स्तंभ का उदनमान -----	१३७
मर्कटी, कलश और स्तंभ का विस्तार -----	१३७
मंदिर के अनेक जाति के स्तंभ का नकशा -----	१३८
कलश का स्वरूप -----	१३९
नाली का मान -----	१३९
द्वारशाखा, देहली और शंखावटी का स्वरूप -----	१४०
चौबीस जिनालय का क्रम -----	१४१
चौबीस जिनालय में प्रतिमा स्थापन क्रम -----	१४१
बावन जिनालय का क्रम -----	१४१
बहतर जिनालय का क्रम -----	१४२
शिखर वाले लकड़ी के प्रासाद का फल -----	१४२
गृहमंदिर का वर्णन -----	१४२
ग्रंथकार प्रशस्ति -----	१४४

## परिशिष्ट

वज्रलेप -----	१४५
वज्रलेप का गुण -----	१४६
ऋषभदेव और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१४७
अजितनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१४८
संभवनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१४८
अभिनंदन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१४९
सुमतिनाथन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५०
पद्मप्रभ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५०
सुपार्श्वजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५१
चंद्रप्रभ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५२
सुविधिजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५२
शीतलजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५३
श्रेयांसजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५४
वासुपूज्य और और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५४
विमलजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५५
अनंतजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५५
धर्मनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५६
शांतिनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५७
कुंथुजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५७
अरनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५८
मल्लिजन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५९
मुनिसुव्रत और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१५९
नमिजिन और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१६०
नेमिनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१६१
पार्श्वनाथ और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१६१
महावीर और उनके यक्ष यक्षिणी -----	१६२
सोलह विधादेवियों का स्वरूप -----	१६३
जयविजयादि चार महा प्रतिहारी देवियों का स्वरूप -----	१६८
दस दिकपालों का स्वरूप -----	१६९
नव ग्रहों का स्वरूप -----	१७२
क्षेत्रपाल का स्वरूप -----	१७४
माणिभद्र क्षेत्रपाल का स्वरूप -----	१७५
सरस्वती देवी का स्वरूप -----	१७५
प्रतिष्ठादिक के मुहूर्त	

संवत्सर, अयन और मास शुद्धि -----	१७६
तिथिशुद्धि -----	१७७
सूर्य और चन्द्र दग्धा तिथि -----	१७८
प्रतिष्ठा तिथि -----	१७८
वार शुद्धि -----	१७९
ग्रहों का उच्चबल -----	१७९
ग्रहों का मित्रबल -----	१८०
ग्रहों का दृष्टिबल-----	१८१
प्रतिष्ठा, शिलान्यास और सूत्रपात के नक्षत्र -----	१८२
प्रतिष्ठाकारक के अशुभ नक्षत्र -----	१८२
बिम्बप्रवेश नक्षत्र -----	१८२
नक्षत्रों की योनि -----	१८३
योनिवैर और नक्षत्रों के गण -----	१८४
राशिकूट और उसका परिहार -----	१८५
राशियों के स्वामी -----	१८५
नाडीकूट और उसका फल -----	१८६
ताराबल -----	१८६
वर्ग बल -----	१८७
लेन देन का विचार -----	१८८
राशि आदि जानने का शतपद चक्र -----	१८९
तीर्थकरों ते जन्मनक्षत्र और राशि -----	१९१
जिनेश्वर के नक्षत्र आदि जानने का चक्र -----	१९२
रवि और सोमवार को शुभाशुभ योग -----	१९४
मंगल और बुधवार के शुभाशुभ योग -----	१९५
गुरु और शुक्रवार को शुभाशुभ योग -----	१९६
शनिवार को शुभाशुभ योग -----	१९७
शुभाशुभयोग चक्र -----	१९८
रवियोग और कुमारयोग -----	१९९
राजयोग, स्थिरयोग, वज्रपातयोग -----	२००
कालमुखी, यमल, त्रिपुष्कर, पंचक और अबला योग -----	२०१
मृत्युयोग -----	२०२
अशुभ योगों परिहार -----	२०२
लग्न विचार -----	२०३
होरा द्रेष्काण और नवमांश -----	२०५
द्वादशांश और त्रिंशांश -----	२०६

षडवर्ग स्थापना यंत्र -----	२०७
ग्रह स्थापना -----	२०८
जिनदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त -----	२१०
महादेव प्रतिष्ठा मुहूर्त -----	२१०
ब्रह्मा, देवी, ईंद्र, कार्तिकेय, यक्ष, चंद्र सूर्य और ग्रह प्रतिष्ठा मुहूर्त -----	२११
बलहीन ग्रहों का फल -----	२१२
प्रासाद विनाश कारक योग -----	२१२
अशुभ ग्रहों का परिहार -----	२१२
शुभग्रह की दृष्टि से क्रूर ग्रह का शुभपन -----	२१३
सिद्धछाया लग्न -----	२१३